http://amritkalashtimes.com

अमृत कलश टाइम्स

वर्ष : 18
अंक : 148

प्रयागराज गुरुवार 13 फरवरी 2025

पृष्ठः- 4, मूल्यः- एक रूपया

महाकुंभ- माघ पूर्णिमा पर 1.83 करोड़ ने डुबकी लगाई

माघ पूर्णिमा स्नान पर्व पर योगी ने दी शुभकामनाएं

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को माघ पूर्णिमा के अवसर पर समस्त श्रद्धालुओं और प्रदेश वासियों को शुभकामनाएं दीं। इसके साथ ही, साधु–संतों, धर्माचार्यो, कल्पवासियों और श्रद्धालुओं का अभिनंदन करते हुए उन्होंने भगवान श्री हरि से सबके सुख–समृद्धि व सौभाग्य तथा मां गंगा–यमुना–सरस्वती से मनोरथ सिद्ध करने की कामना की। सोशल मीडिया प्लेटफश्वर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए उन्होंने लिखा " पावन स्नान पर्व माघ पूर्णिमा की सभी श्रद्धालुओं एवं प्रदेश वासियों को हार्दिक बधाई! महाकुम्भ–2025, प्रयागराज में आज पवित्र त्रिवेणी में पुण्य स्नान हेतु पधारे सभी पूज्य साधु–संतों, धर्माचार्यो, कल्पवासियों और श्रद्धालुओं का हार्दिक अभिनंदन! भगवान श्री हरि की कृपा से सभी के जीवन में सुख, समृद्धि और सौभाग्य का वास हो।

● 15 किमी तक भीड़, श्रद्धालुओं पर 25 क्विंटल फूल बरसाए, अनिल कुंबले ने स्नान किया

प्रयागराज,(एजेंसी)। महाकुंभ में माघ पूर्णिमा का स्नान जारी है। प्रयागराज में जबरदस्त भीड़ है। संगम से 15 किमी तक चारों तरफ श्रद्धालुओं की भीड़ है। प्रशासन के मुताबिक, दोपहर 2 बजे तक 1.83 करोड़ लोग स्नान कर चुके हैं। अनुमान है कि आज 2.5 करोड़ श्रद्धालु डुबकी लगाएंगे। श्रद्धालु पर हेलिकॉप्टर से 25 क्विंटल फूल बरसाए गए। प्रयागराज जाने वाले रास्तों में भीषण जाम के बाद ट्रैफिक प्लान में बदलाव किया गया है।

शहर में वाहनों की एंट्री बंद है। मेला क्षेत्र में भी कोई भी वाहन नहीं चलेगा। ऐसे में श्रद्धालुओं को संगम पहुंचने के लिए 8 से 10 किमी तक पैदल चलना पड़ रहा है। प्रशासन पार्किंग से शटल बसें चला रहा है। हालांकि, यह बेहद सीमित हैं। संगम पर पैरामिलिट्री फोर्स के जवान तैनात हैं। वहां लोगों को रुकने नहीं दे रहे हैं, ताकि भीड़ न बढ़ पाए। ज्यादातर लोगों को बाकी घाटों पर स्नान के लिए भेजा जा रहा है। भीड़ कंट्रोल के लिए पहली बार मेले में 15 जिलों के डीएम, 20 आईएएस और 85 पीसीएस अफसर तैनात किए गए हैं। इधर, लखनऊ में सीएम योगी सुबह 4 बजे से मुख्यमंत्री आवास पर बने वॉर रूम से महाकुंभ की मॉनिटरिंग कर रहे हैं। डीजी प्रशांत कुमार, प्रमुख सचिव (गृह) संजय प्रसाद और कई सीनियर अफसर भी हैं। ज्योतिषाचार्यों के मुताबिक, माघ पूर्णिमा स्नान का मुहूर्त शाम 7.22 मिनट तक रहेगा। महाकुंभ मेले से भीड़ जल्दी बाहर निकल जाए, इसलिए लेटे हनुमान मंदिर, अक्षयवट और डिजिटल महाकुंभ सेंटर को बंद कर दिया गया है। आज महाकुंभ में कल्पवास भी खत्म हो जाएगा। संगम स्नान के बाद करीब 10 लाख कल्पवासी घर लौटेंगे। महाकुंभ का आज 31वां दिन है। इससे पहले 4 स्नान पर्व हो चुके हैं।

13 जनवरी से अब तक करीब 46 करोड़ श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। अब 26 फरवरी को महाशिवरात्रि पर आखिरी स्नान पर्व होगा। श्रद्धालु पर हेलिकॉप्टर से 25 क्विंटल फूल बरसाए गए। प्रयागराज जाने वाले रास्तों में भीषण जाम के बाद ट्रैफिक प्लान में बदलाव किया गया है। शहर में वाहनों की एंट्री बंद है। मेला क्षेत्र में भी कोई भी वाहन नहीं चलेगा। ऐसे में श्रद्धालुओं को संगम पहुंचने के लिए 8 से 10 किमी तक पैदल चलना पड़ रहा है। प्रशासन पार्किंग से शटल बसें चला रहा है। हालांकि, यह बेहद सीमित हैं। संगम पर पैरामिलिट्री फोर्स के जवान तैनात हैं। वहां लोगों को रुकने नहीं दे रहे हैं, ताकि भीड़ न बढ़ पाए। ज्यादातर लोगों को बाकी घाटों पर स्नान के लिए भेजा जा रहा है। भीड़ कंट्रोल के लिए पहली बार मेले में 15 जिलों के डीएम, 20 IAS और 85 PCS अफसर तैनात किए गए हैं। इधर, लखनऊ में सीएम योगी सुबह 4 बजे से मुख्यमंत्री आवास पर बने वॉर रूम से महाकुंभ की मॉनिटरिंग कर रहे हैं। डीजी प्रशांत कुमार, प्रमुख सचिव (गृह) संजय प्रसाद और कई सीनियर अफसर भी हैं।

`आप' से उठ गया जनता का विश्वासः अशोक गहलोत

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। गहलोत ने कहा कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी द्वारा कांग्रेस पर उन्हें हरवाने के आरोप पूर्णतरू निराधार हैं। असलियत में तो आम आदमी पार्टी ने कई राज्यों में कांग्रेस को हरवाने का काम किया है जहां उनका कोई आधार ही नहीं था परन्तु केवल कांग्रेस के वोट काटने के उद्देश्य से आप वहां जाकर चुनाव लड़ी। कांग्रेस नेता और राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बुधवार को कहा कि आम आदमी पार्टी से जनता का विश्वास उठ चुका है और कांग्रेस ने दिल्ली में अकेले चुनाव लड़कर भविष्य के लिए अपनी भूमिका तैयार कर ली है। एक्स पर एक पोस्ट में, गहलोत ने आम आदमी पार्टी के उन दावों का भी खंडन किया कि कांग्रेस पार्टी ने आप को दिल्ली चुनाव हराने में भूमिका निभाई थी। उन्होंने आगे पुष्टि की कि कांग्रेस दिल्ली में मुख्य विपक्ष की भूमिका निभाएगी और आगामी चुनावों के लिए पृष्ठभूमि तैयार करेगी। गहलोत ने कहा कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी द्वारा कांग्रेस पर उन्हें हरवाने के आरोप पूर्णतरू निराधार हैं।

'पता नहीं किस ग्रह पर रहती हैं'

● वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के लिए ये क्या बोल गई प्रियंका गांधी

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। अठावले ने कहा कि निर्मला सीतारमण ने देश के सामने हकीकत पेश की। उन्होंने बताया कि पिछले 10 साल में भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ है। उन्होंने आंकड़ों के साथ हकीकत पेश की। विपक्ष का दावा है कि गैर–बीजेपी राज्यों को कुछ नहीं मिला। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाद्रा ने मंगलवार को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की उस टिप्पणी के लिए उन पर हमला बोला कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तहत भारत में मुद्रास्फीति यूपीए सरकार की तुलना में काफी कम है। प्रियंका गांधी ने कहा कि मुझे नहीं पता कि वह किस ग्रह पर रह रही हैं। वह कह रही हैं कि कोई मुद्रास्फीति नहीं है, बेरोजगारी नहीं बढ़ी है, कीमतों में कोई वृद्धि नहीं हुई है। केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले ने इसपर पलटवार किया है। अठावले ने कहा कि निर्मला सीतारमण ने देश के सामने हकीकत पेश की। उन्होंने बताया कि पिछले 10 साल में भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ है। उन्होंने आंकड़ों के साथ हकीकत पेश की। विपक्ष का दावा है कि गैर–बीजेपी राज्यों को कुछ नहीं मिला। लेकिन निर्मला सीतारमण ने जो आंकड़े पेश किए उससे पता चला कि हर राज्य को फायदा हुआ है। अठावले ने कहा कि दुनिया देख रही है कि हमारी अर्थव्यवस्था 5वें स्थान पर पहुंच गई है। गांधी की टिप्पणी लोकसभा में

केंद्रीय बजट 2025 पर चर्चा के दौरान निर्मला सीतारमण के जवाब में आई। सीतारमण ने कहा, ष्मुद्रास्फीति प्रबंधन इस सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। कुल मिलाकर, खुदरा मुद्रास्फीति 2–6 प्रतिशत के अधिसूचित सहनशीलता बैंड के भीतर है।ष उन्होंने बताया कि यूपीए के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के दूसरे कार्यकाल के दौरान खाद्य मुद्रास्फीति ष्दोंकाने वाली 11 प्रतिशतष थी। इसके बाद सीतारमण ने कहा कि एनडीए सरकार के तहत खाद्य मुद्रास्फीति 2014 से 2024 तक घटकर 5.3 प्रतिशत हो गई, उन्होंने कहा कि यूपीए के समय में देखी गई 10 प्रतिशत की दोहरे अंक वाली हेडलाइन मुद्रास्फीति अब ष्नहींष है।

मार्सिले पहुंचे मोदी, वीर सावरकर और उनकी आजादी की लड़ाई को किया याद

मार्सिले,(एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ बुधवार तड़के बंदरगाह शहर मार्सिले पहुंचे। दोनों यहां एक नए भारतीय वाणिज्य दूतावास का उद्घाटन करेंगे और विश्व युद्ध में शहीद हुए भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि भी देंगे। श्री मोदी ने कहा कि मार्सिले का विशेष महत्व है क्योंकि यहीं पर स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर ने ब्रिटिश अधिकारियों की कैद से भागने का साहसी प्रयास किया था। उन्होंने उस समय के फ्रांसीसी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया जिन्होंने मांग की थी कि उन्हें ब्रिटिश हिरासत में नहीं सौंपा जाए। प्रधानमंत्री ने 'एक्स' पर पोस्ट में कहा, "राष्ट्रपति मैक्रों और मैं थोड़ी देर पहले मार्सिले पहुंचे। इस यात्रा में भारत और फ्रांस को और जोड़ने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण कार्यक्रम होंगे। जिस भारतीय वाणिज्य दूतावास का उद्घाटन किया जा रहा है, वह लोगों के बीच संबंधों को और गहरा करेगा। मैं प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में शहीद हुए भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि भी अर्पित करूंगा।" उन्होंने कहा, "भारत की स्वतंत्रता की खोज में यह शहर विशेष महत्व रखता है।

पवार ने शिंदे को दिया 'गौरव सम्मान'

● संजय राउत ने कहा– ऐसे पुरस्कार खरीदे–बेचे जाते हैं

मुंबई,(एजेंसी)। शिवसेना (यूबीटी) के राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे को मिले पुरस्कार पर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने ऐसे सम्मान दिए जाने की विश्वसनीयता पर भी गंभीर सवाल खड़े किए हैं। महाराष्ट्र की राजनीति एक बार फिर चर्चा में है। ताजा घटनाक्रम विपक्षी खेमे– महाविकास अघाड़ी (एमवीए) के नेता द्वारा भाजपा नीत महायुति सरकार में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को सम्मानित किए जाने का है। इस मामले में एमवीए के प्रमुख चेहरे और शिवसेना (यूबीटी) के राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने टिप्पणी की है। महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे को मिले पुरस्कार पर राउत ने सवाल खड़े किए। उन्होंने सवाल किया, श्क्या आप जानते हैं कि यह पुरस्कार किसने दिया? राजनीतिक नेताओं को दिए जाने वाले ऐसे पुरस्कार या तो खरीदे जाते हैं या बेचे जाते हैं।श क्या है मामला, किसने–किसे सम्मानित किया बता दें कि महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को शरद पवार नीत राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी–एसपी) के प्रमुख और वयोवृद्ध राजनेता शरद पवार ने महादजी शिंदे राष्ट्र गौरव पुरस्कार (Mahadji Shinde Rashtra Gaurav Puraskar) से सम्मानित किया है। गौरतलब है कि शिंदे विधानसभा चुनाव 2024 से पहले महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री थे। उन्होंने उद्धव ठाकरे नीत शिवसेना के खिलाफ बगावत की थी। जिसके बाद वे भाजपा के समर्थन से सीएम बने थे। अब्दुल्ला ने कहा कि कल ही इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) विस्फोट में दो जवान शहीद हो गये। उन्होंने सवला करते हुए कहा कि वह कहां से आया? जम्मू–कश्मीर में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए हमें लोगों की मदद की जरूरत है।

41 साल बाद न्याय, 1984 सिख दंगा केस में सज्जन कुमार दोषी करार

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। सज्जन कुमार वर्तमान में दिल्ली कैंट में एक अन्य सिख विरोधी दंगा मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। मामला 1984 के सिख विरोधी दंगों के दौरान यहां सरस्वती विहार इलाके में दो व्यक्तियों की हत्या से संबंधित है। अदालत ने एक नवंबर 1984 को जसवंत सिंह और उनके बेटे तरुणदीप सिंह की हत्या से संबंधित मामले में अंतिम दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट ने बुधवार को 1984 सिख विरोधी दंगा मामले में पूर्व कांग्रेस सांसद सज्जन कुमार को दोषी करार दिया। यह मामला 1 नवंबर 1984 को सरस्वती विहार इलाके में पिता–पुत्र की हत्या से जुड़ा है। मामले को सजा पर बहस के लिए 18 फरवरी को सूचीबद्ध किया गया है। सज्जन कुमार वर्तमान में दिल्ली कैंट में एक अन्य सिख विरोधी दंगा मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। मामला 1984 के सिख विरोधी दंगों के दौरान यहां सरस्वती विहार इलाके में दो व्यक्तियों की हत्या से संबंधित है। अदालत ने एक नवंबर 1984 को जसवंत सिंह और उनके बेटे तरुणदीप सिंह की हत्या से संबंधित मामले में अंतिम दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। 16 दिसंबर, 2021 को अदालत ने कुमार के विरुद्ध आरोप तय किए और उनके खिलाफ "प्रथम दृष्टया" मामला सही पाया।

भारत में एशिया का पहला वर्टिकल लिफ्ट ब्रिज

● जब निकलेंगे शिप तब 72 फीट ऊपर उठ जाएगा

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। पुराने पंबन ब्रिज के होने के बाद नए पबंन ब्रिज की जरूरत क्यों पड़ी? नए पुल और पुराने पुल में क्या अंतर होने वाला है? इसे बनाने में कितनी मेहनत और संसाधन लगे हैं? इसके अलावा इस पुल की क्या खासियत होंगी और इससे भारत को कितना फायदा होने वाला है? आइये जानते हैं... भारत में इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में जल्द ही एक नया मानक स्थापित होने वाला है। दरअसल, अगले महीने ही देश में नए पंबन ब्रिज का उद्घाटन होने वाला है, जो कि भारत में मंडपम से जाने वाले रेल नेटवर्क को पंबन द्वीप पर मौजूद रामेश्वरम से जोड़ेगा। इसी के साथ मौजूदा समय में मंडपम और रामेश्वरम के बीच बने 1914 में बने पुराने पंबन ब्रिज को हटाने की प्रक्रिया को शुरू किया जा सकता है। इस बीच नए पंबन ब्रिज को लेकर कई तरह के सवाल हैं। आखिर पुराने पंबन ब्रिज के होने के बाद नए पबंन ब्रिज की जरूरत क्यों पड़ी? नए पुल और पुराने पुल में क्या अंतर होने वाला है? इसे बनाने में कितनी मेहनत और संसाधन लगे हैं? इसके अलावा इस पुल की क्या खासियत होंगी और इससे भारत को कितना फायदा होने वाला है? आइये जानते हैं... पहले जानें– पुराना पंबन ब्रिज क्यों खास था? भारत के दक्षिण में तमिलनाडु के सबसे निचले सिरे पर मंडपम नाम का छोटा कस्बा स्थित है। इसके ठीक नीचे बीच में समुद्र का हिस्सा पड़ता है और इसके बाद पंबन द्वीप, जिस पर स्थित है।

रामेश्वरम, जो कि भारत में ऐतिहासिक काल से अहमियत रखता है। 1870 के करीब ब्रिटिश शासनकाल में जब अंग्रेजों ने भारत को व्यापार के केंद्र के तौर पर स्थापित करने की ठानी, तब श्रीलंका के साथ संपर्क के लिए इस पुल को बनाने के लिए पहली बार योजना तैयार हुई।

कवायद

हाल ही सुप्रीम कोर्ट ने एक प्रकरण में चाइल्ड पोर्नोग्राफी को डाउनलोड करने को गंभीर अपराध की संज्ञा देते हुए कई स्पष्टीकरण दिए हैं। कोर्ट ने यह भी कहा कि निचली अदालतें 'चाइल्ड पोर्नोग्राफी' के स्थान पर 'चाइल्ड एब्यूज एंड एक्सप्लोइटेटिव मटेरियल' शब्दावली का प्रयोग करें। सरकार को भी इस अनुसार कानून में संशोधन करने की सलाह कोर्ट ने दी है। निश्चित ही बच्चों की सोशल मीडिया पर मौजूदगी कम होने पर उन्हें होने वाले कई नुकसानों से बचाया जा सकेगा। बच्चों को ऑनलाइन नुकसान से सुरक्षा देने के उद्देश्य से अमरीका ने 1996 में 'कम्युनिकेशन डीसेंसी अधिनियम' बनाया था, परंतु अमरीका के सर्वोच्च न्यायालय ने उसे संविधान में दी गई अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन करार देते हुए निरस्त कर दिया। इसके बाद 1998 में 13 वर्ष से कम बच्चों के लिए वेब सर्विसेज और ऑनलाइन सर्विसेज पर कई निजता संबंधी शर्तें लगाते हुए 'चिल्ड्रंस ऑनलाइन प्रोटेक्शन अधिनियम' लाया गया, परंतु कोर्ट ने इसे भी खारिज कर दिया। इसके बाद वर्ष 2000 में नया कानून 'चिल्ड्रंस इंटरनेट प्रोटेक्शन एक्ट' बनाया गया जिसमें स्कूल और पुस्तकालयों में ऑनलाइन सर्विसेज हेतु आवश्यक फिल्टर उपयोग करने के प्रावधान किए गए ताकि बच्चे आपत्तिजनक सामग्रियां न देख पाए। यह भी शर्त रखी गई कि जो स्कूल और पुस्तकालय ऑनलाइन सर्विसेज हेतु आवश्यक फिल्टर का उपयोग नहीं करेंगे, उन्हें फेडरल फंड नहीं दिया जाएगा। इस प्रकार अमरीका बच्चों को ऑनलाइन नुकसान से बचाने के लिए आंशिक रूप से कुछ प्रावधान कर सका।

कोई प्रतिबंध न होने से बच्चे आजकल अपना काफी समय सोशल मीडिया पर गुजारते हैं। इससे न केवल इससे उनका मानसिक विकास प्रभावित होता है, बल्कि वे अपना काफी समय भी नष्ट करते हैं। कुछ समय पहले फ्लोरिडा में एक बच्चे ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के एक टूल (कैरेक्टर.एआई) के उपयोग करने की आदत के चलते आत्महत्या कर ली थी। बच्चे की मां ने गूगल के खिलाफ कोर्ट में बच्चों को बहकाने (मिस प्रेजेंटेशन) संबंधी केस दर्ज किया है। हाल ही ऑस्ट्रेलिया के निचले सदन ने 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की पहुंच प्रतिबंधित करने हेतु एक नया कानून पारित किया है। इसके तहत 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चे सोशल मीडिया पर अपना अकाउंट न खोल पाएं, इसकी जिम्मेदारी केवल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की होगी, न कि स्वयं बच्चे या उनके माता–पिता की। नए कानून के उल्लंघन करने पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर 49.5 मिलियन ऑस्ट्रेलियन डॉलर का जुर्माना लगाया जा सकेगा। संभवतरू ऑस्ट्रेलिया पहला देश है जिसके द्वारा ऐसा कड़ा कानून बनाया जा रहा है। हालांकि भारत में ऑस्ट्रेलिया जैसा कानून बनाने का प्रस्ताव सामने नहीं आया है, केंद्रीय मंत्री द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के विरुद्ध आपत्तिजनक सामग्री को प्रसारित होने से रोकने के लिए कानूनी प्रावधान कड़े करने की बात लगातार कही जा रही है।

वर्तमान सूचना–प्रौद्योगिकी अधिनियम में 'सेफ हार्बर' सिद्धांत के अंतर्गत थर्ड पार्टी द्वारा प्रसारित की जा रही सामग्री के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को 'ड्यू डिलिजेंस' के अंतर्गत गलत जानकारी एवं आपत्तिजनक सामग्री प्रसारित करने से रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए, परंतु क्या–क्या कदम उठाए जाएं, इस पर अधिनियम एवं 2021 में जारी किए गए नियम मौन हैं। कई राज्यों द्वारा स्कूल में मोबाइल फोन का उपयोग प्रतिबंधित किया गया है, परंतु केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है। इसलिए ऑस्ट्रेलिया की तरह भारत को भी बच्चों को सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव से बचने के लिए एक उपयुक्त कानून बनाने पर विचार करना उचित होगा।

साहित्य के नाम पर मनोरंजन का मंच

विमल कुमार

पिछले साल हिंदी के प्रख्यात लेखक एवम संस्कृतिकर्मी अशोक वाजपेयी ने इसलिए इस समारोह का बहिष्कार किया था कि उनसे आयोजकों ने पूछा था कि वे पहले सूचित करें कि वे मंच पर क्या बोलेंगे। लेकिन इस बार आइटम गर्ल को बुलाए जाने से विवाद अधिक है।ज् साहित्य के नाम पर मनोरंजन का मंच सजाने पर उस मंच की शोभा बढ़ाने की बजाय अगर लेखक जन आंदोलनों में शामिल हों और लेखन, पठन का अपना मंच सजाएं तो क्या वह ज्यादा बेहतर नहीं होगा?

पिछले कुछ दिनों से हिंदी साहित्य की दुनिया में हंगामा बरपा हुआ है। एक टीवी चौनल के साहित्यिक कार्यक्रम में लेखकों के साथ–साथ बॉलीवुड के सितारों को बुलाए जाने के कारण सोशल मीडिया पर यह हंगामा मचा हुआ है। इस बीच पिछले दिनों दो लेखक संगठनों के दो पदाधिकारियों ने इस्तीफा भी दे दिया, जिससे इस मामले ने अधिक तूल पकड़ लिया। एक लेखक के बारे में कहा जा रहा है कि उसने टीवी चौनल के साहित्योत्सव में जाने पर अपने मित्र लेखक द्वारा तंज किए जाने के कारण इस्तीफा दिया है।

जो लोग इस तरह के समारोहों में जा रहे हैं उनका तर्क है कि लेखकों को हर मंच पर जाना चाहिए और इस तरह जनता से जुडना चाहिए क्योंकि हमारे लेखक संगठन जनता से नहीं जुड़े हैं। इन लेखकों का कहना है कि हम किसी भी मंच पर जाएं लेकिन हमें अपनी बात खरी–खरी कहनी चाहिए। लेकिन जो लोग इस टीवी चौनल के साहित्योत्सव के विरोधी हैं उनका तर्क है कि अगर बॉलीवुड के लोगों को बुलाना है तो साहित्य की आड़ में यह क्यों किया जा रहा, इसे श्साहित्य आज तक्य की बजाय श्मनोरंजन आज तक्य के नाम से किया जाए।

आखिर साहित्य के जलसे में आइटम गर्ल को क्यों बुलाया जा रहा। उनका तर्क यह भी है कि इस तरह के टीवी चौनलों के मंच सांप्रदायिक लोगों द्वारा संचालित हैं और वह साहित्य को बाजार बनाने में लगे हुए हैं। इसलिए उनके मंच से उनके खिलाफ बात नहीं कहीं जा सकती और अगर किसी ने कहा भी तो उसका व्यापक असर नहीं होने वाला है क्योंकि ज्यादातर वक्ता बाजार के समर्थक ही हैं।

पिछले साल हिंदी के प्रख्यात लेखक एवम संस्कृतिकर्मी अशोक वाजपेयी ने इसलिए इस समारोह का बहिष्कार किया था कि उनसे आयोजकों ने पूछा था कि वे पहले सूचित करें कि वे मंच पर क्या बोलेंगे। लेकिन इस बार आइटम गर्ल को बुलाए जाने से विवाद अधिक है। अब हिंदी के लेखकों में ध्रुवीकरण भी हो गया है। लेखिकाओं में भी विभाजन हो गया है। एक वर्ग आइटम गर्ल को बुलाए जाने का समर्थक है तो एक वर्ग विरोधी। इस तरह साहित्य की दुनिया में इन दिनों उथल–पुथल अधिक है। हिंदी के लेखकों का एक धड़ा, जिनमें कुछ प्रगतिशील और कलावादी भी हैं, वह इस समारोह में भाग ले रहा है, जबकि एक धड़ा उसका लगातार विरोध ा कर रहा है।

भाग लेने वालों में पुरुषोत्तम अग्रवाल, अरुण कमल और गौहर राजा जैसे लोग हैं तथा बाबुषा कोहली, अनुराधा सिंह और लवली गोस्वामी एवम जोशना बनर्जी जैसी कवयित्रियां भी। कुछ साल पहले इसी टीवी चौनल के साहित्यिक कार्यक्रम में हिंदी के प्रगतिशील जनवादी कवि राजेश जोशी के भाग लेने पर काफी तीखी प्रतिक्रिया हुई थी। लेकिन

इसके बावजूद जनवादी लेखक इस समारोह में जाते रहे। अब प्रगतिशील लेखक संगठन ने पिछले दिनों चंडीगढ़ में एक प्रस्ताव पारित कर कॉरपोरेट के समारोहों में भाग लेने से लेखकों को मना किया है। पर दो अन्य वाम लेखक संगठनों ने इस तरह का प्रस्ताव नहीं पारित किया है।

आखिर क्या कारण है कि इस तरह के आयोजन को लेकर हिंदी में तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की जा रही है? पिछले 10–15 वर्षों से हिंदी में लिट् फेस्ट की संख्या काफी बढ़ी है और उनमें हिंदी के लेखक बुलाए जा रहे हैं। कहा यह जा रहा है कि जिन लोगों को लिट् फेस्ट में नहीं बुलाया जा रहा है वह अपनी कुंठा के कारण उसका विरोध कर रहे हैं। लेकिन हिंदी जगत में कुछ ऐसे लेखक हैं, जो ऐसे मंचों पर कभी जाते ही नहीं। वह इन मंचों को तमाशाई, अगम्भीर, उत्सव धर्मी अधिक मानते हैं। इन मंचों से कायदे की कोई बात नहीं कहीं जा सकती है और न सुनी जा सकती है। लेकिन लेखकों का एक तबका यह कहता है कि हमें बाजार से परहेज नहीं करना चाहिए। आखिर हमारी किताबों को बाजार में ही बिकना है इसलिए अगर हम अधिक से अधिक बाजार तलाशेंगे तो अधिक पाठकों तक पहुंचेंगे।शायद यही कारण है कि सोशल मीडिया पर आज का लेखक अपनी किताब का खुद प्रचार–प्रसार करता हुआ दिख रहा है। हिंदी में ऐसे भी लेखक हैं जो यह काम नहीं करते हैं और यह मानते हैं कि किताब का प्रचार–प्रसार करना प्रकाशक की जिम्मेदारी है ना कि लेखक की। इससे पहले हिंदी के लेखक अपनी किताबों का इस तरह प्रमोशन नहीं करते थे और प्रचार नहीं करते थे। यह सारी जिम्मेदारी पहले प्रकाशक की थी। ऐसे में लेखक प्रकाशक का यह काम क्यों कर रहे हैं?दरअसल बाजार और पूंजी ने सब कुछ उलट–पुलट दिया है। पहले उसने राजनीति को अपने चंगुल में लिया, फिर मीडिया को लिया और अब साहित्य को अपने चंगुल में ले रहा है। पर यह भी सच है कि हिंदी के लेखक भी जनता से कट गए हैं और लेखक संगठन संकीर्ण और कट्टर होने के कारण दूसरी विचारधारा के लेखकों को अपने मंच पर नहीं बुलाते, अपनी पत्रिकाओं में नहीं छापते। इसलिए हिंदी में लेखकों का एक वर्ग इस बात की शिकायत करता रहा है कि आखिर वह किस मंच पर जाए और अपनी बात कहे। लेकिन इस पूरी बहस में एक बात उभर कर आ रही है कि लेखक भी पूंजी के इस खेल में फंस गया है। ऐसे में हिंदी के साहित्यकार क्या करें उनके पास कोई ऐसा बड़ा मंच नहीं है जहां से वे जनता से जुड़ सकें।इस बहस में यह सवाल भी उठ रहा है कि अगर हिंदी के लेखकों को जनता से जुडना ही है तो वे किसान आंदोलन में क्यों नहीं जाते? वे मजदूर आंदोलन में क्यों नहीं भाग लेते? वे अपने मोहल्ले कॉलेज और स्कूलों में रचना पाठ की परंपरा को शुरू क्यों नहीं करते? किसी मीडिया समूह के साहित्य के नाम पर मनोरंजन का मंच सजाने पर उस मंच की शोभा बढ़ाने की बजाय अगर लेखक जन आंदोलनों में शामिल हों और लेखन, पठन का अपना मंच सजाएं तो क्या वह ज्यादा बेहतर नहीं होगा?

लक्ष्य से दूर है प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध

डॉ. विवेक एस. अग्रवाल

सभी स्वैच्छिक संस्थाओं की ओर से प्लास्टिक की बोतलों पर पूर्ण प्रतिबंध ा लगाने की मांग पर, दक्षिण कोरिया के बुसान शहर में आयोजित विश्वस्तरीय वार्ता आईएनसी–5 की बैठक में दुनिया के शीर्ष नेतृत्व द्वारा चर्चा की जा रही है। उद्देश्य है कि एक ऐसा नीतिगत एवं क्रियान्वयन प्रस्ताव तैयार हो, जिसके तहत सभी देश अनिवार्य रूप से समुद्र एवं सतही स्तर पर प्लास्टिक के दुरुपयोग को बंद कर वातावरणीय नुकसान को रोकें। साथ ही इसके विकल्प के लिए शोध पर अपने निवेश को बढ़ावा देने और लोगों में व्याप्त इसके उपयोग की खराब आदत को छोडने के लिए अभियान चलाएं। पिछले दो दशक से संभवतया दुनिया का कोई ऐसा कोना नहीं है जो कि प्लास्टिक के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष नुकसान से आहत न हुआ हो। प्लास्टिक से बढ़ती स्वास्थ्य समस्या ने इस बाबत त्वरित व सुदृढ़ कार्रवाई के लिए विश्व को सचेत करते हुए कार्रवाई के लिए जागृत किया है। उम्मीद है कि प्लास्टिक पर संधि एक बंधनकारी रूप में पेश की जाएगी। यह तो भविष्य ही बताएगा कि इस बंधनकारी संधि को कितने राष्ट्र, कितने स्तरों पर और कितनी ईमानदारी से धरातल पर उतारेंगे।

यदि भारत के संदर्भ में बात करें तो कई पहल हुई हैं, जिसके तहत सिंगल यूज प्लास्टिक, पतले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया। जबकि वास्तविकता यह है कि आज भी इन सबका खुलेआम उपयोग हो रहा है। सीआइआइ की पहल पर पहली बार वर्ष 2021 में भारत में प्लास्टिक संधि को लागू किया गया। इसके तहत व्यापार–उद्योग जगत के साथ सरकार और स्वैच्छिक संगठनों ने वर्ष 2030 के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित किए थे, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण पैकेजिंग के लिए इस्तेमाल की जाने वाली शत प्रतिशत सामग्री को रियूज, रिसाइकल या खाद बनाने के लिए उपयोग में लेने का संकल्प था। यह भी तय किया गया था कि पैकेजिंग में इस्तेमाल ५० प्रतिशत प्लास्टिक और पैकेजिंग में उपयोग होने वाली अन्य सामग्री का एक चौथाई हिस्सा दोबारा से उपयोग में लें। संधि के तहत समस्या उत्पन्न करने वाले एवं अनावश्यक प्लास्टिक पैकेजिंग सामग्री की सूची बनाने का लक्ष्य भी निर्धारित किया गया ताकि उनकी बनावट में परिवर्तन किया जाए। इस संधि पर 54 सदस्यों ने हस्ताक्षर किए थे और एक रोडमैप की तय किया था ताकि लक्ष्यों को जल्द पूरा किया जा सके। संधि के अलग हटकर अगर धरातल पर विश्लेषण किया जाए तो अभी हम लक्ष्यों से बहुत दूर हैं।

हालांकि कुछ औद्योगिक घरानों ने प्लास्टिक के उपयोग को कम करने संबंधी पहल के तहत अपने सीएसआर फंड का उपयोग किया है। इसमें उन्होंने विभिन्न बाजारों को प्लास्टिकमुक्त बनाने और रिसाइकल–रियूज को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएं मुहैया करवाई है। इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के तहत भी प्लास्टिक का ज्यादा उपयोग करने वाली कंपनियों के सहयोग से विभिन्न शहरों में मटेरियल रिकवरी फैसिलिटीज की स्थापना हुई, लेकिन कुछ अपवाद को छोड़ वे लंबे समय तक धरातल पर नहीं दिखे। इसका मूलभूत कारण आज भी विभिन्न स्रोतों से एकत्रित किए जाने वाले कचरे का मिश्रित स्वरूप है। जहां एक ओर प्लास्टिक के विकल्प की बात कही जा रही है, वहीं इस तथ्य को भी अच्छे से समझना होगा कि जब तक प्लास्टिक को अलग–अलग रूप में एकत्रित नहीं किया जाएगा तब तक यह समस्या बनी रहेगी। वर्तमान परिस्थितियों में अलग–अलग तरीके से प्लास्टिक एकत्र करना दूर की कौड़ी नजर आता है।दुर्भाग्यवश हम हर दायित्व को शासन का दायित्व मानकर पल्ला झाड़ लेते हैं। शासन का दायित्व होता है कि वह नियम कानून से अनुशासन का दायरा कायम करें, जिसके तहत नागरिक अपने आप को बेहतर व्यवहार के साथ समाज एवं राष्ट्र पर हो रहे किसी भी विपरीत प्रभाव से रोकने में अपनी भूमिका निर्देशानुसार वहन कर सके। लेकिन हकीकत इससे बहुत दूर है। ऐसे में आमजन कानून से अनभिज्ञता के बहाने उनकी अवहेलना करने लगते हैं और उसके दूरगामी प्रभाव के प्रति विचार ही नहीं करते। ऐसा नहीं है कि यह अनभिज्ञता एवं अवहेलना का भाव मात्र कम पढ़े–लिखे या आर्थिक रूप से वंचित में ही होता है, उच्च शिक्षित और सम्पन्न व्यक्ति भी अपने व्यवहार में वातावरण एवं समाज पर हो रहे दुष्प्रभाव के बारे में तनिक भी चिंता नहीं रखते हैं। ऐसा प्लास्टिक के उपयोग के संबंध में तो बहुत ही सामान्य तौर पर देखा जाता है। हालांकि कुछेक प्रतिष्ठानों ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के तहत प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने और उसे अमल में लाने के प्रयास किए हैं, लेकिन संपन्नता के मदहोश में लोग आज भी सिंगल यूज प्लास्टिक की मांग कर बैठते हैं। सिर्फ यह सोचते हुए कि क्या फर्क पड़ता है? अपनी सुविधा के चलते इंसान सामाजिक एवं वातावरणीय दुष्प्रभाव के विचार से बहुत दूर रहता है। तथ्य तो यह है कि प्लास्टिक जैसी वस्तु के समुद्र में फेंकने के बाद वह समुद्री जीवों, जल एवं अन्य माध्यम से पुनरू शरीर में प्रवेश कर जाती है और उस फेंकने वाले की सेहत पर ही विपरीत प्रभाव छोड़ जाती है। वैश्विक स्तर पर यह भी माना गया है कि प्लास्टिक के साथ उसको बनाने में उपयोग किए जाने वाले रसायन भी संपूर्ण सृष्टि और जैव विविधता पर अपने दुष्प्रभाव छोड़ते है। इनसे बचाव के लिए और दुष्प्रभाव पर नियंत्रण के लिए आवश्यक है कि समस्त राष्ट्र अपने लिए कुछ ऐसे लक्ष्य निर्धारित करें जो कि उनके योगदान को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हों। अन्यथा यह भी अनेकानेक संधियों में से एक बन कर रह जाएगी और प्लास्टिक का तांडव ना सिर्फ चलता रहेगा बल्कि बढ़ता रहेगा। इस संधि से वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक के उत्पादन को कम करने के साथ–साथ उसके विकल्प खोजने के लिए संसाधन को पर्याप्त रूप से उपलब्ध कराने पर भी बल दिया गया है। लेकिन आज के संदर्भ में यह सत्य है कि बिना विकल्प तलाशे प्लास्टिक से निजात नहीं पाया जा सकता है।

ध्येय का मखौल

दृशरद शर्मा

दूध को बच्चों के लिए प्रमुख पौष्टिक आहार माना जाता है। खास तौर पर कुपोषण के शिकार बच्चों के पोषण में दूध की अहम भागीदारी रहती है। लेकिन जब प्रदेश के आंगनवाड़ी केंद्रों में यह दूध वितरण ही भेदभाव का शिकार हो जाए तो इसे बच्चों के प्रति संवेदनहीनता ही कहा जाएगा। सरकार ने जोर–शोर से ऐलान किया था कि प्रदेश के करीब 62 हजार आंगनवाड़ी केंद्रों में 36 लाख बच्चों को सप्ताह में तीन दिन दूध पिलाया जाएगा।

सरकारी टेंडर प्रक्रिया में देरी और अफसरशाही ने इन आंगनवाड़ी केंद्रों के 'पोषण भी और शिक्षा भी' ध्येय का मखौल उड़ाना शुरू कर दिया है। क्योंकि अब 6 साल तक के बच्चों में से सिर्फ 3 से 6 साल तक के उन बच्चों तक ही यह दूध ा पहुंचेगा जो आंगनवाड़ी केंद्रों में पहुंचते हैं। तीन साल से कम उम्र के बच्चे जिन्हें दूध के जरिए पोषण की ज्यादा जरूरत होती है वे दूध से वंचित रहेंगे। जबकि इस आयुवर्ग के बच्चों को उनके घर तक दूध पहुंचाने की बात कही गई थी। हैरत की बात यह है कि बजट घोषणा के मुताबिक सात माह पहले ही बच्चों तक दूध पहुंचना था जो अभी तक नहीं पहुंच पाया। आंगनवाड़ी केंद्र न सिर्फ बच्चों के पोषण और प्रारंभिक शिक्षा में अहम भूमिका निभाते हैं, बल्कि महिलाओं व परिवारों के सशक्तीकरण में भी खासा योगदान देते हैं। एक तरफ सरकारी स्तर पर इन केंद्रों को प्ले स्कूल के रूप में भी विकसित करने के दावे किए जा रहे हैं, दूसरी ओर नामांकन बढ़ाने के प्रयास इस लेटलतीफी की भेंट चढ़ते नजर आ रहे हैं। तीन साल से कम उम्र के करीब बीस लाख बच्चों तक दूध नहीं पहुंचाने का मतलब उनके पोषण की परवाह नहीं करना ही है।राजस्थान में कुपोषण एक बड़ी समस्या है, विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में महिला और बच्चों को पोषक तत्व पूरे नहीं मिल पाते हैं। राज्य सरकार ने आंगनवाड़ी केंद्रों में बच्चों व गर्भवती महिलाओं के पोषण के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। इसके तहत, विशेष रूप से कुपोषण से जूझ रहे बच्चों को भोजन के साथ–साथ पोषणयुक्त आहार भी दिया जाता है। प्रारम्भिक शिक्षा में भी मिड–डे मील के जरिए बच्चों को पोषाहार दिया जाता है। किसी भी कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है कि वह बच्चों की सेहत की चिंता के साथ उनके पोषण का समुचित बंदोबस्त भी करे। बच्चों को दूध से वंचित करना घोर लापरवाही है और इसके जिम्मेदारों का पता लगाकर सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए।

निकायो के आय के श्रोतों को बढ़ाने हेतु आवश्यक कार्यवाही की जाये: डीएम

धार्मिक स्थलों के सौन्दर्यीकरण के कार्यो को गुणवत्तापूर्ण ढंग से करायें लापरवाही मिलने पर होगी कार्यवाही

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी जी नें कैम्प कार्यालय के सभागार में नगरीय निकाय की समीक्षा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने समस्त अधिशासी अधिकारी से नगरीय निकायों में आय के श्रोत के सम्बन्ध में जानकारी ली और नगरीय निकायों में आय के श्रोत को कैसे बढ़ाया जा सके के सम्बन्ध में समस्त ईओ को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उन्होने निर्देशित किया कि सभी अपने–अपने नगरीय निकायों में हाउस टैक्स कब लास्ट में कब रिवाइज्ड किया गया है इसको देखकर आवश्यक कार्यवाही करें। उन्होने कहा कि नगरीय निकायों में आटो स्टैण्ड, साइकिल स्टैण्ड जो अवैध रूप से संचालित है उनका निरीक्षण कर लें तथा टेण्डर कराकर लाइसेन्स निर्गत कर आय के श्रोत बढ़ाये। उन्होने राज्य वित्त, 15वें वित्त की समीक्षा की। वन्दन योजना में धार्मिक स्थलों के सौन्दर्यीकरण की समीक्षा कर निर्देशित किया कि वन्दन योजना के तहत धार्मिक स्थलों के सौन्दर्यीकरण के कार्यो को गुणवत्तापूर्ण ढंग से कराये, यदि निरीक्षण के दौरान कमियां पायी जायेंगी तो सम्बन्धित के विरूद्ध कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। नगरीय निकायों में निर्माणाधीन कान्हा गौशाला के कार्यो की समीक्षा कर निर्देशित किया कि जिन नगरीय निकायों में कान्हा गौशाला का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है वहां पर मुख्य पशु चिकित्साधिकारी व खण्ड विकास अधिकारी से समन्वय कर गोवंशों को संरक्षित किया जाये और उनके भरण पोषण हेतु व्यवस्था करायी जाये और जिन नगरीय निकायों मे गौशाला हेतु जमीन की उपलब्धता नही हो पायी है सम्बन्धित उपजिलाधिकारियों से समन्वय कर 15 दिन के अन्दर जमीन की उपलब्धता सुनिश्चित कराकर निदेशालय को प्रस्ताव भेजा जाये। गौशालाओं के निर्माण की गुणवत्ता यदि ठीक न हो तो हैण्डओवर न किया जाये। स्वच्छ भारत मिशन नगरीय निकाय की समीक्षा कर जिलाधिकारी ने समस्त ईओ को कड़े निर्देश दिये कि सामुदायिक शौचालय एवं पिंक शौचालय की साफ–सफाई बेहतर रखे, यदि किसी भी प्रकार की शिकायत पायी जायेगी कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। उन्होने कहा कि नगरीय निकाायों को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाये, साफ–सफाई के सारे उपकरण, सामग्री पर्याप्त मात्रा में रहे। कहीं पर भी कूड़ा–कचरा इकट्ठा न रहे, सभी नगरीय निकायों में प्रकाश आदि की व्यवस्था रहे। समस्त ईओ सुबह–शाम क्षेत्र में निकले और अपने नगर निकायों का निरीक्षण करे तथा जो भी कमियां दिखाई दें उसे दुरूस्त करायें। निदेशालय से समन्वय बनाकर रखें जिससे किसी भी कार्य में कोई भी समस्या न होने पाये और कार्य समय से किये जा सके। नगरीय निकायों में यदि कार्य गुणवत्तायुक्त पूर्ण हो गया है तो सम्बन्धित कार्यदायी संस्था को भुगतान समय से कर दिया जाये।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय ने गाजीपुर में शोक संवेदना व्यक्त की

लखनऊ प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय आज लखनऊ से गाजीपुर के बसूका गांव पहुंचे, जहां उन्होंने कुंभ ड्यूटी के दौरान मौनी अमावस्या के दिन ड्यूटी पर तैनात स्व. अंजनी राय के परिजनों से मिलकर शोक संवेदना व्यक्त की। उनके साथ प्रदेश उपाध्यक्ष मकसूद खां, प्रदेश महासचिव देवेंद्र सिंह, मणीन्द्र मिश्रा, प्रदेश सचिव आनंद राय और गाजीपुर प्रभारी फसाहत हुसैन बाबू भी थे।अजय राय ने शोकाकुल परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि कुंभ मेले की अव्यवस्था में ड्यूटी पर तैनात स्व. अंजनी राय की दुखद मृत्यु प्रशासनिक चूक का परिणाम है। उन्होंने कहा कि विभाग के लोग इसे हार्ट अटैक और तबियत खराब का नाम दे रहे हैं, जो कि पूरी तरह गलत है। परिवार के सदस्यों और अन्य जानकारों से यह पुष्टि हुई है कि वे पूरी तरह स्वस्थ थे, तभी उनकी मेला ड्यूटी लगी थी।उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मेला प्रशासन ने स्व. अंजनी राय की मृत्यु को 30 जनवरी 2025 को ड्यूटी के दौरान बताया, जबकि उनकी मृत्यु 29 जनवरी 2025 को हो गई थी। अजय राय ने सरकार से इस मामले की निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए कहा कि जो भी दोषी हैं, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए।अजय राय ने कुंभ भगदड़ की घटना पर भी सवाल उठाया और कहा कि सरकार तीन बार हुई भगदड़ में मरने वालों का सही आंकड़ा नहीं दे पा रही है, जबकि स्नान करने वालों का आंकड़ा रोज जारी किया जा रहा है। उन्होंने इसे सरकार की साजिश करार देते हुए कहा कि सरकार सही आंकड़े छुपाने की कोशिश कर रही है।

अधिकारियों को दिए कड़े निर्देश

लखनऊ(आरएनएस) उत्तर प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने पर्यटन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि नये भारत के नये उत्तर प्रदेश में आए व्यापक बदलाव और मजबूत अर्थव्यवस्था को देखते हुए सभी लंबित निर्माण परियोजनाओं को युद्धस्तर पर पूरा किया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि परियोजनाओं में विलम्ब के लिए जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, कार्यदायी संस्थाओं को निर्देशित किया गया कि स्वीकृत परियोजनाओं में आगणन के दौरान स्वीकृत डिजाइन के अनुसार ही कार्य कराया जाए। श्री सिंह ने कामदगिरी परिक्रमा मार्ग पर खुरदरी टाइल्स या पत्थर लगाने की भी बात कही।जयवीर सिंह आज पर्यटन भवन में पर्यटन विभाग की विभिन्न सेक्टरों में अर्जित की गई उपलब्धियों की समीक्षा कर रहे थे। इस दौरान, उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा घोषित वन ट्रिलियन डॉलर इकोनामी के संकल्प को पूरा करने के लिए पर्यटन विभाग द्वारा जारी की गई बहुउद्देशीय पर्यटन नीति का उल्लेख किया। इस नीति के तहत, अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु उद्यमियों और निवेशकों द्वारा 26805.68 करोड़ रुपये का निवेश एवं 48373 आवासीय कक्षों का निर्माण प्रस्तावित है। 2024–25 में 24 अप्रैल तक 463 पंजीकृत इकाइयों द्वारा 17854 आवासीय कक्षों का निर्माण किया जाएगा।

साक्षरता के महत्व पर दिया बल

लखनऊ(आरएनएस) उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संदीप सिंह ने साक्षरता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा ही व्यक्ति को समाज और राष्ट्र की प्रगति में योगदान करने का अवसर प्रदान करती है। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति के विकास का महत्वपूर्ण साधन बताया और कहा कि शिक्षा से रोजगार के अवसर मिलते हैं, जिससे व्यक्ति अपनी जीवनशैली को बेहतर बना सकता है। संदीप सिंह ने यह भी कहा कि असाक्षर व्यक्ति अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर सकता और इसके कारण वह सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं का समुचित लाभ भी नहीं उठा पाता। उनका मानना है कि जब व्यक्ति साक्षर होगा, तो वह सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होगा और उनका लाभ उठाने में सक्षम होगा।इस अवसर पर साक्षरता एवं वैकल्पिक शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश द्वारा राज्य स्तरीय श्उल्लास मेलाश का आयोजन किया गया। यह मेला राज्य संसाधन केन्द्रश्इंडिया लिटरेसी बोर्ड, लखनऊ के परिसर में आयोजित हुआ। मेला में उत्तर प्रदेश के सभी मंडलों के स्टॉल लगाए गए थे, जिनका अवलोकन मंत्री ने किया और नव भारत साक्षरता कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी ली।

स्वरोजगार बढ़ाने के लिए दिए निर्देश

लखनऊ(आरएनएस) उत्तर प्रदेश के पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने अधिकारियों को यह निर्देश दिया कि निराश्रित गोवंश के संरक्षण के साथ–साथ गौशालाओं में गौजन्य उत्पादों के उपयोग से स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार की संभावनाओं को बढ़ाया जाए। उन्होंने कहा कि गौशालाओं के आसपास के क्षेत्रों में किसानों, पशुपालकों और विशेष रूप से महिलाओं को जागरूक किया जाए, ताकि गौजन्य उत्पादों का सदुपयोग करके उनकी आमदनी में वृद्धि हो सके। इससे महिला स्वयं सहायता समूह आत्मनिर्भर बन सकेंगे, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा और पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं होगा, क्योंकि ईको–फ्रेंडली उत्पाद बनाए जाएंगे।श्री सिंह ने आज विधान भवन स्थित अपने कार्यालय में पशुधन एवं दुग्ध विकास विभाग के उच्चाधिकारियों के साथ बैठक की, जिसमें प्रदेश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने और गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उपायों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने किसानों और पशुपालकों के हित में चलाए जा रहे योजनाओं को समय से लाभार्थियों तक पहुंचाने और योजनाओं का व्यापक प्रचार–प्रसार करने के निर्देश दिए।मंत्री ने गोआश्रय स्थलों के प्रभारी और पशुचिकित्साधिकारियों को भूसा और अन्य चारा की गुणवत्ता की निगरानी रखने के निर्देश भी दिए। साथ ही, वृहद गोसंरक्षण केंद्रों के निर्माण में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने के लिए कहा।

दुर्घटनाओं को रोकने के लिए उपाय

लखनऊ (आरएनएस)उत्तर प्रदेश में सड़क सुरक्षा को लेकर जस्टिस अभय मनोहर सप्रे, अध्यक्ष माननीय सुप्रीम कोर्ट कमेटी ऑन रोड सेफ्टी की अध्यक्षता में 05 फरवरी, 2025 को योजना भवन, लखनऊ में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में राज्य सरकार के प्रमुख अधिकारी और अन्य स्टेकहोल्डर विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।बैठक में प्रदेश में बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त की गई और सड़क सुरक्षा के प्रयासों को तेज करने पर जोर दिया गया। मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश द्वारा 01 जनवरी 2025 को आयोजित राज्य सड़क सुरक्षा परिषद की बैठक में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए सभी विभागों को मिलकर काम करने का आदेश दिया गया।"नो हेल्मेट–नो फ्यूल" अभियान की सराहना की गई, जिसके तहत परिवहन विभाग द्वारा दो पहिया वाहनों के चालकों को सुरक्षा के लिए जागरूक किया जा रहा है। अब यह निर्देश दिया गया कि सभी सरकारी विभागों और निजी संस्थानों में बिना हेल्मेट के कर्मचारियों को कार्यालयों में प्रवेश पर रोक लगाई जाए।सड़क दुर्घटनाओं में 31: मृत्यु दो पहिया वाहन चालकों की हुई है।

भावुक हुए कल्पवासी, बोले दिव्य,भव्य और स्वच्छ महाकुम्भ की स्मृतियां रहेंगी साथ

महाकुम्भ नगर। प्रयागराज के संगम तट में लगे आस्था के सबसे बड़े धार्मिक और सांस्कृतिक समागम महाकुम्भ में एक महीने से प्रवाहित हो रही जप, तप और साधना की त्रिवेणी की धारा के साक्षी रहे कल्पवासियों की माघ पूर्णिमा स्नान के साथ विदाई हो गई। पौष पूर्णिमा के स्नान पर्व के साथ त्रिवेणी की रेत पर शुरू हुआ कल्पवास का माघ पूर्णिमा स्नान पर्व के साथ समापन हो गया। सभी कल्पवासी स्नान, दान और मां गंगा का आशीष लेकर महाकुम्भ की आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ अपने–अपने गंतव्य की तरफ प्रस्थान कर गए। 'महाकुम्भ की आध्यात्मिक ऊर्जा बटोर त्रिवेणी के तट से विदा हुए 10 लाख से अधिक कल्पवासी' महाकुम्भ अध्यात्म और संस्कृति का दुनिया का सबसे बड़ा आयोजन है। महाकुम्भ का हर सेक्टर, हर स्थान ज्ञान, भक्ति और साधना के विविध रंगों से गुलजार है। महाकुम्भ में अखाड़ों के वैभव के अलावा जप, तप और साधना की त्रिवेणी के प्रवाह के साक्षी रहे कल्पवासियों की माघ पूर्णिमा के स्नान पर्व के साथ विदाई हो गई। ब्रह्म मुहूर्त में त्रिवेणी में माघ पूर्णिमा की डुबकी लगाकर कल्पवासी अपने शिविर पहुंचे। कल्पवासियों ने तीर्थ पुरोहितों के सानिध्य में विधि विधान से दान और हवन का अनुष्ठान पूरा किया। तीर्थ पुरोहित राजेंद्र पालीवाल बताते हैं कि वैसे तो शास्त्र में 84 तरह के दान का उल्लेख है, लेकिन जिसकी जो श्रद्धा होती है उसका दान तीर्थ पुरोहित स्वीकार कर लेते हैं। शैय्या दान, अन्न दान, वस्त्र दान और धन दान आदि का अनुष्ठान माघ पूर्णिमा को किया जाता है। किसी कारण वश अगर कोई कल्पवासी माघ पूर्णिमा को यह अनुष्ठान पूरा नहीं कर पाता तो वह अगले दिन त्रिजटा का स्नान कर यहां से विदा हो जाता है। माघ पूर्णिमा में दस लाख से अधिक कल्पवासी महा कुम्भ की आध्यात्मिक ऊर्जा लेकर यहां से प्रस्थान कर गए। 'कल्पवासियों की महाकुम्भ से घर वापसी के लिए प्रशासन ने विशेष योजना पर किया अमल' मेला क्षेत्र से कल्पवासियों की सकुशल घर वापसी के लिए महाकुम्भ प्रशासन ने अलग योजना बनाई है। डीआईजी महाकुम्भ वैभव कृष्ण माघ पूर्णिमा के पहले कल्पवासियों से इसे लेकर अपील कर चुके थे जिसके अनुसार ही महाकुम्भ से कल्पवासियों की रवानगी की योजना पर अमल किया गया। मेला क्षेत्र में पहले से ही आ चुकी भारी भीड़ को देखते हुए कल्पवासियों के वाहनों की मेला क्षेत्र से निकासी मेला में भीड़ छंटने के बाद सुनिश्चित की गई। कल्पवासियों को घर वापस ले जाने वाले ट्रैक्टर व अन्य छोटे वाहनों को मेला क्षेत्र के बाहर बनाई गई पार्किंग में खड़ा करने के लिए कहा गया। श्रद्धालुओं के स्नान के सकुशल सम्पन्न होने के बाद कल्पवासी अपने वाहनों से अपना सामान लेकर विदा हो गए। 'महाकुम्भ से विदा होते भावुक हुए कल्पवासी, बोले दिव्य,भव्य और स्वच्छ महाकुम्भ की स्मृतियां रहेंगी साथ' महाकुम्भ का आयोजन देश के चार स्थानों प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में होता है, लेकिन कल्पवास की परम्परा केवल प्रयागराज में है। इस वर्ष महा कुम्भ के आयोजन ने भी कल्पवास को विशिष्ट बना दिया। योगी सरकार की तरफ प्रयागराज महाकुम्भ को दिव्य, भव्य और स्वच्छ महाकुम्भ स्वरूप दिए जाने पर मेला क्षेत्र के विभिन्न सेक्टर में प्रवास कर रहे इन कल्पवासियों का अनुभव भी अलग रहा। प्रतापगढ़ जिले से कल्पवास करने आए राम अचल मिश्रा का कहना है कि कल्पवास के उनके इस वर्ष 18 साल पूरे हो गए। वैसे तो संयम और नियम के साथ पूजा पाठ और जप–तप के साथ संतों की वाणी का श्रवण ही उनका उद्देश्य रहता है, लेकिन इस बार कल्पवासियों के शिविरों को गंगा के घाट के नजदीक स्थान देकर प्रशासन ने अच्छा काम किया है। 76 बरस की उम्र में भी त्रिवेणी के तट में इस कपकपाती ठंड में रेत में इन तंबुओं में कल्पवास करने आये सतना के शिवनाथ गहमरी अपने 23वें कल्पवास का इस साल का अनुभव बताते–बताते भावुक हो जाते हैं। उनका कहना है कि त्रिवेणी के तट पर मिली शांति और आध्यात्मिक वातावरण की अनुभूति लेकर वह गंगा मैया की गोद से विदा हो रहे हैं।

साफ सफाई व्यवस्था की तारीफ हर तरफ हो रही– नगर आयुक्त

प्रयागराज। नगर आयुक्त चंद्र मोहन गर्ग ने सफाई व्यवस्था पर कहा कि शहर की आबादी से 30 गुना ज्यादा जनसंख्या शहर में है । सभी शहर के अंदर से हो कर संगम जा रहे हैं, ऐसे में शहर को स्वच्छ बनाए रखने में नगर निगम ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है । यह सब आप सभी के सहयोग और जिम्मेदारी पूर्ण कार्य करने की वजह से संभव हो सका है । जैसे अब तक बेहतर सफाई व्यवस्था से हमने दूर–दराज से आए श्रद्धालुओं का दिल जीत कर परीक्षा पास की है ।

संगम क्षेत्र से रोज निकल रहा 400 टन कचरा, 30 दिन में 11000 टन का हुआ निस्तारण।

महाकुम्भ नगर। माघी पूर्णिमा के अवसर पर उत्तर प्रदेश के नगर विकास विभाग के सचिव अनुज कुमार झा ने स्वच्छ महाकुम्भ के तहत मेला

क्षेत्र का औचक निरीक्षण किया। इस निरीक्षण में उन्होंने मेला क्षेत्र में सफाई व्यवस्था, शौचालयों की स्थिति और नदी के किनारे की स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया। झा ने बताया कि, महाकुम्भ क्षेत्र में 150000 शौचालयों की सफाई, नदी के तटों पर पूजन सामग्री का श्रद्धा पूर्वक सफाई एवं ट्रैश स्कीमर द्वारा नदी में डाले गए फूल–माला और अन्य पूजन सामग्रियों का निस्तारण निरंतर किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि हर दिन संगम क्षेत्र से 400 टन कचरा निकल रहा है। इसको हटाने के लिए 1000 गाड़ियां लगाई गई हैं। पिछले 30 दिनों में नगर विकास विभाग 11 हजार टन कचरे का निस्तारण कर चुका है। उन्होंने कहा कि, सफाई मित्र महाकुम्भ मेला क्षेत्र की स्वच्छता के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं । सफाई कर्मियों द्वारा 24 घंटे सभी क्षेत्रों में सड़कों की सफाई और कचरे के संग्रहण का कार्य निरंतर रूप से किया जा रहा है। ड्यूटी पर लगाए गए अतिरिक्त अधिकारियों द्वारा स्वच्छता कार्यों की निगरानी की जा रही है। निरीक्षण के दौरान अनुज कुमार झा ने सफाई कर्मचारियों से मुलाकात की और उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने मेला क्षेत्र में स्थापित शौचालयों का भी निरीक्षण किया और निर्देश दिए कि सफाई व्यवस्था उच्च स्तरीय बनाए रखें, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। साथ ही, उन्होंने मेला क्षेत्र में स्थित संगम नोज और अन्य घाटों का भी निरीक्षण किया।

शिक्षा स्वास्थ्य पर आस्था हावी।

प्रयागराज। प्रयागवासियों के लिए यह महाकुंभ आफत का महाकुंभ हो गया है महीने भर से बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं मरीज अस्पताल नहीं जा पा रहे हैं प्रयागराज वासी हाउस ऐरेस्ट हो गए हैं।उक्त बातें सांसद प्रतिनिधि सपा प्रदेश सचिव विनय कुशवाहा ने कहीं उन्होंने कहा कि जमुनापार –गंगापार वालें रोजमर्रा के जरूरत पूरी करने ,आफिस आने के लिए चार से पांच घंटे जाम में फंसे रहतें हैं समस्या तो उन गम्भीर मरीजों की हैं जो प्रयागराज शहर या दिल्ली लखनऊ इलाज के लिए जाना चाहते हैं तो नहीं जा पा रहे हैं जाम की वजह से और आज भी जाम की मुख्य वजह वीवीआईपी मूमेंट हैं जिसकी वजह से रास्ते घंटों बंद कर दिऐ जाते हैं और उसके बाद भयानक जाम लग जाता हैं।सांसद प्रतिनिधि ने कहा कि क्या मजाक बना रखा हैं इस महाकुम्भ मे उत्तर प्रदेश की कैविनेट कि बैठक हुई तो चलों ठीक है पर राजस्थान की कैविनेट की बैठक की परमिशन कैसे दी गई जहाँ सौकड़ों लोग चंद दिन पहले भगदड़ में मरे हो वहाँ देश के मंत्री आकर मौज मस्ती कर रहे हैं कितनी शर्मनाक बात है। सांसद प्रतिनिधि ने कहा कि सैकड़ों मौत के बाद भी किसी भी एक वीवीआईपी का प्रोग्राम कैंसिल नहीं हुआ इससें यह सावित होता हैं कि गरीब इंसान के जान की कोई कीमत नहीं है वो कीड़े मकोड़े की तरह कुचलें जाते रहे बड़े लोग अपना काम करते रहते कितनी असंवेदनशीलता हैं।

शंकराचार्य का आशिर्वाद प्राप्त किया।

महाकुंभ नगर। केन्द्रीय भारी उद्योग एवं इस्पात राज्यमंत्री भारत सरकार भूपतिराज श्री निवास वर्मा की धर्मपत्नी वेंकटेश्वरी देवी के साथ आंध्र प्रदेश के श्रद्धालुओं का समूह कुम्भनगर के सेक्टर 18 हर्षवर्धन मार्ग स्थित पुरी शंकराचार्य शिविर पहुंचकर पीठारोहण समारोह में भाग लिया। साधुसंतों को भोजन कराया और शंकराचार्य का आशिर्वाद प्राप्त किया।

ग्यारह लाख पार्थिव शिवलिंग निर्माण एवं श्री शिवमहापुराण कथा

महाकुंभ नगर। सप्तम दिवस पर 2 लाख 65 हजार पार्थिव शिवलिंगों का निर्माण, पूजा–अर्चना और अभिषेक का भव्य आयोजन सम्पूर्ण श्रद्धा और भक्ति के साथ किया गया। पूजन और अभिषेक के पश्चात सभी पार्थिव शिवलिंगों का विसर्जन श्रद्धा और उल्लास के साथ किया गया। आज कथा से पूर्व पूज्य महाराज श्री ने श्री देवांश जी को जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी और आशीर्वाद दिया। इस दौरान प्रयाग स्मीति ने श्री देवांश जी को 51 किलो फूलों की माला पहनाकर जन्मदिवस की शुभकामनाएं दीं। आज कथा में महाराज श्री ने वैलेंटाइन डे पर कहा कि यह हमारे भारतीय संस्कार और पारंपरिक सभ्यता के अनुरूप नहीं है, और इसे फैलाने का उद्देश्य हमारी संस्कृति को नष्ट करना है। महाराज श्री ने सभी सनातनी बेटों और बेटियों से निवेदन किया, कि वे इस दिन को मनाने से बचें और अपने संस्कृति, परिवार और माता–पिता के सम्मान को प्राथमिकता दें। वही लोग वैलेंटाइन डे मनाने जाएं, जिन्हें अपने माता–पिता का सम्मान और संस्कार की कोई अहमियत नहीं है। महाराज श्री ने कहा सनातन बोर्ड निर्माण अत्यंत आवश्यक है और आज पूर्णिमा के दिन हम भगवान से प्रार्थना करते है कि जल्द ही सनातन की सुरक्षा के लिए सनातन बोर्ड का गठन हो। हमें 5 करोड लोग चाहिए जो सनातन के लिए खड़े हो, जो सनातन की रक्षा के लिए एकजुट हो। महाराज श्री ने राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी, गृहमंत्री अमित शाह जी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा, ष्आप सभी ने संगम में आकर पवित्र स्नान किया और सनातन धर्म के ध्वज को ऊंचा किया है। हम सभी सनातनियों को आप पर गर्व है। महाकुंभ में पूज्य महाराज श्री के सानिध्य में 11 लाख पार्थिव शिवलिंग निर्माण एवं श्री शिवमहापुराण कथा दृ 6 फरवरी से 12 फरवरी 2025 तक स्थानरू शान्ति सेवा शिविर, सेक्टर 17, संगम लोअर मार्ग, नागवासुकी चौराहा (पश्चिमी पटरी), महाकुंभ मेला, प्रयागराज।

कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने लगाई संगम में डुबकी, मौनी अमावस्या हादसे के मृतकों को दी श्रद्धांजलि

महाकुंभ नगर (प्रयागराज)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने माघी पूर्णिमा पर संगम में डुबकी लगाई। उनके साथ बेटे पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह एवं उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री मुकुंद तिवारी ने भी स्नान किया। इसी तरह यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री जगदंबिका पाल भी परिवार के साथ संगम स्नान के लिए पहुंचे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने माघी पूर्णिमा पर संगम में डुबकी लगाई। उनके साथ बेटे पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह एवं उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री मुकुंद तिवारी ने भी स्नान किया। दिग्विजय सिंह ने ज्योतिष्पीठ के शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती का भी आशीर्वाद लिया। दिग्विजय सिंह को दो दिन पहले ही संगम स्नान के लिए आना था लेकिन जाम की

वजह से उन्होंने कार्यक्रम स्थगित कर दिया था। इसी क्रम में बुधवार को वह आए। कांग्रेस नेता ने संगम में डुबकी लगाने के साथ मौनी अमावस्या को हुए हादसे के मृतकों के प्रति संवेदना प्रकट की। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि महाकुंभ में आने वालों को काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। श्रद्धालुओं को कई किमी पैदल चलना पड़ा। यदि इतने लोगों को बुलाया गया है तो व्यवस्था भी होनी चाहिए थी। दिग्विजय सिंह ने कहा कि महाकुंभ आस्था का पर्व है। वह हर बार स्नान के लिए आते रहे हैं। महाकुंभ जैसे आयोजन को लेकर किसी तरह की राजनीति ठीक नहीं है। नॉर्वे के पूर्व जलवायु एवं पर्यावरण मंत्री एरिक सोलहेम महाकुंभ पहुंचे। उन्होंने इसे अद्वितीय और जीवन में एक बार मिलने वाला अनुभव बताया। उन्होंने इसे न केवल विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक आयोजन बताया बल्कि भव्य आयोजन की प्रशंसा करते हुए कहा कि मानव इतिहास में इससे बड़ा कोई आयोजन कभी नहीं हुआ, न अमेरिका में, न यूरोप में, न चीन में और न ही विश्व के किसी अन्य कोने में। नॉर्वे के पूर्व जलवायु एवं पर्यावरण मंत्री एरिक सोलहेम ने कहा कि अब तक 48 करोड़ से अधिक श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगा चुके हैं। ये श्रद्धालु यहां देवों का आशीर्वाद लेने, आध्यात्मिक और भावनात्मक यात्रा पर निकलने, मित्रता को प्रगाढ़ करने तथा परिवार के साथ पर्व मनाने के लिए जुटे हैं।

कोर शताब्दी वर्ष पर महाप्रबंधक ने वृक्षारोपण किया।

प्रयागराज। भारतीय रेल में इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन 03 फरवरी 2025 को उद्घाटन समारोह के पश्चात विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। बुधवार संजय कुमार श्रीवास्तव महाप्रबंधक कोर की अध्यक्षता में मुख्यालय प्रांगण में पौधारोपण अभियान का आयोजन किया। महत्वपूर्ण कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना और हरित पर्यावरण के अनुकूल वातावरण बनाए रखने के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाना है। इस आयोजन में यतेंद्र कुमार–मुख्य प्रशासनिक अधिकारी सहित एस. एस. नेगी–मुख्य विद्युत इंजीनियर (च–क), आर. एन. सिंह–प्रमुख मुख्य संकेत एवं दूरसंचार इंजीनियर, तथा अन्य अधिकारी व कर्मचारी गण भी उपस्थित रहे और मिलकर परिसर में पौधे लगाए, जिससे भारतीय रेलवे की कार्बन फुटप्रिंट को कम करने और हरियाली बढ़ाने की प्रतिबद्धता को बल मिलेगा।

कुंबले ने संगम में लगाई डुबकी, सोशल मीडिया पर साझा की तस्वीरें

महाकुंभ नगर (प्रयागराज)। महाकुंभ में माघी पूर्णिमा के मौके पर पूर्व भारतीय क्रिकेटर और कोच अनिल कुंबले ने त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाई। उनकी पत्नी चेतना रामतीर्था भी इस आध्यात्मिक यात्रा में उनके साथ रहीं। महाकुंभ में माघी पूर्णिमा के मौके पर पूर्व भारतीय क्रिकेटर और कोच अनिल कुंबले ने त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाई। उनकी पत्नी चेतना रामतीर्था भी इस आध्यात्मिक यात्रा में उनके साथ रहीं। कुंबले ने संगम स्नान के बाद अपनी तस्वीरें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा कीं। उन्होंने अपनी तस्वीरों के साथ सिर्फ एक शब्द लिखा और वो था ब्लेस्ड (आशीर्वाद)। इससे उनका तात्पर्य यही था कि त्रिवेणी संगम में स्नान कर उन्हें भी पुण्य की प्राप्ति हुई और तीर्थराज प्रयागराज का आशीष मिला। अपनी फिरकी से विरोधी बल्लेबाजों को पवेलियन की राह दिखाने वाले अनिल कुंबले मंगलवार को ही प्रयागराज पहुंच गए थे। हालांकि, त्रिवेणी स्नान के लिए उन्होंने माघ पूर्णिमा का पावन दिन चुना। इस दिन महाकुंभ में वीवीआईपी प्रोटोकॉल जारी नहीं होता। इसके बावजूद वह सामान्य श्रद्धालु की तरह नाव पर सवार होकर त्रिवेणी संगम पहुंचे और संगम में स्नान किया।

सम्पादक
सिद्धनाथ द्विवेदी
प्रबन्धक निदेशक
दीपक जयसवाल
सम्पादकीय कार्यालय
11ई/2, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के आधीन होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सिद्धनाथ द्विवेदी द्वारा काम्पीटेंट बिजनेस सर्विसेज विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित एवं 399 कृष्णानगर कीडगंज से प्रकाशित।
सम्पादक–सिद्धनाथ द्विवेदी, आरएनआई नं. UPHIN/2007/22706 रजि.नं. AD-32/2008-09 ईमेलः amritkt.alld@gmail.com फोन नं. : 9453273951, 8799627062